सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

जिला पुस्तिका
पंच गौरव नागौर

जिला प्रशासन, नागौर

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।
जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

प्रकाशन से जुड़े अधिकारी/कर्मचारी

श्री अरूण कुमार पुरोहित,
जिला कलक्टर
एवं अध्यक्ष पंच गौरव कार्यक्रम,नागौर

श्री राम कुमार राव
उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी
एवं सदस्य सचिव पंच गौरव कार्यक्रम,नागौर

श्री रणजीत टाडा
सांख्यिकी निरीक्षक

विषय–सूची

क्र.सं.	विषय	पेज संख्या
1	प्रस्तावना	5–6
2	कार्यक्रम के उद्देशय	7
3	कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना	
	अ–नोडल विभाग	8
	ब– समन्वय	9
4	"पंच गौरव प्रोत्साहन समिति" नागौर	10
5	जिला स्तरीय समिति के कार्य	11
6	पंच गौरव नागौर	12
7	एक जिला–एक उत्पादः पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण	13
8	एक जिला–एक उपजः मूंग	14
9	एक जिला–एक वनस्पति : खेजड़ी	15–16
10	एक जिला–एक खेलः कबड्डी खेल	17
11	एक जिला–एक पर्यटन स्थलः मीराबाई स्मारक	18

1. प्रस्तावना

नागौर जिलाः एक संक्षिप्त परिचय

नागौर, इतिहास की मानें तो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व बसा यह शहर अहिछत्रपुर नाम से महाभारत काल में अपने अस्तित्व को भी दर्शाता है। पांडवों में धनुर्धर अर्जुन द्वारा अपने गुरू द्रौणाचार्य के लिए विजय किए गए क्षेत्र का हिस्सा माने जाने वाली इस प्राचीन धरा को जांगल प्रदेश नाम भी दिया गया है।

नागौर जिला राजस्थान के मध्य–पश्चिम भाग में स्थित है और यह ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा कृषि की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण जिला है। यह जिला राजस्थान के सबसे बड़े जिलों में से एक है और अपनी समृद्ध विरासत, विशिष्ट कृषि उत्पादों तथा धार्मिक–सांस्कृतिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है।

भौगोलिक स्थिति एवं प्रशासनिक विभाजन

नागौर जिला राजस्थान के हृदयस्थल में स्थित है और यह कई प्रमुख जिलों से घिरा हुआ है। राजस्थान के मध्य में स्थित नागौर जिला 10 हजार 990 वर्ग किलोमीटर में फैला है। जिले की उत्तरी सीमा निकटवर्ती बीकानेर व चूरू, पूर्वी सीमा डीडवाना–कुचामन, दक्षिणी सीमा अजमेर, ब्यावर व पाली तथा पश्चिमी सीमा फलौदी व जोधपुर जिले से लगती है। 16 लाख 81 हजार 906 जनसंख्या वाले इस जिले का जनसंख्या घनत्व 153 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

नागौर का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। यह क्षेत्र नागवंशी राजाओं, प्रतिहारों, चौहानों और राठौड़ वंश के शासनकाल का साक्षी रहा है। यहाँ स्थित नागौर किला अपनी भव्यता और ऐतिहासिक घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है। संत मीराबाई और संत पीपाजी की कर्मभूमि भी यही रही है। इसके अलावा, यहाँ तेजाजी महाराज की जन्मस्थली खरनाल स्थित है, जो श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है।

पंच–गौरव कार्यक्रम

नागौर जिलें में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग–अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतिया पाई जाती हैं। जिले में अलग–अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते है। इसके साथ ही नागौर में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य की कई ईकाईयां है। पर्यटन की दृष्टि से भी नागौर जिलें में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद है। जिले कीं विभिन्न खेल गतिविधियां में प्रमुख पहचान रही है। जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए नागौर जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा रही है। जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के जिले के सर्वांगीण विकास हेतु नागौर में ''पंच गौरव'' कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। कार्यक्रम अन्तर्गत जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए ''पंच गौरव'' के रूप में जिले में एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक उपज, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला–एक खेल एवं एक जिला–एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये। जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना क्रियान्वित है।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरीकरण और क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता , विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलें में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधांए विकसित करना।
- जिलें में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

3.कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

अ. नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग होगा। राज्य स्तर पर एक जिला–एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला–एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला–एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला–एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार राज्य स्तरीय समिति का गठन किया जाएगा–

क्र.सं	अधिकारी	पद
1.	मुख्य सचिव	अध्यक्ष
2.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, उद्योग एवं वाणिज्य	सदस्य
3.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी	सदस्य
4.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन	सदस्य
5.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, खेल एवं युवा मामलात	सदस्य
6.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव/सचिव, पर्यटन, कला एवं संस्कृति	सदस्य
7.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/ प्रमुख शासन सचिव/ सचिव, सूचना एवं जन सम्पर्क	सदस्य
8.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, वित्त अथवा उनके द्वारा नामित संयुक्त शासन सचिव स्तर के अधिकारी	सदस्य
9.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/ प्रमुख शासन सचिव / सचिव, आयोजना	सदस्य
10.	अतिरिक्त मुख्य सचिव / प्रमुख शासन सचिव / सचिव, सदस्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग	सदस्य
11.	निदेशक एवं संयुक्त सचिव, आर्थिक एवं सांख्यिकी	सदस्य सचिव

ब– समन्वय

प्रत्येक जिले में, जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों। पच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया जाएगाः–

क्र.सं	अधिकारी	पद
1	जिला कलेक्टर	अध्यक्ष
2	जिला स्तरीय अधिकारी उद्योग, कृषि एवं उद्यानिकी वन एवं पर्यावरण, खेल एवं युवा मामलात, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग	सदस्य
3	जिला कलक्टर द्वारा नामित राजस्थान लेखा सेवा का अधिकारी	सदस्य
4	संयुक्त/उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी जिला कार्यालय	सदस्य सचिव

जिला कलक्टर समिति की बैठक में आवश्यकतानुसार अन्य अधिकारियों को भी आमंत्रित कर सकेंगे।

4 "पंच गौरव प्रोत्साहन समिति" नागौर

"पंच गौरव" प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निम्नानुसार **"पंच गौरव प्रोत्साहन समिति"** नागौर का गठन किया गया है।

क्र.स़.	अधिकारी	पद
1	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2	जिला स्तरीय अधिकारी • उप वन संरक्षक, नागौर • महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, नागौर • संयुक्त निदेशक, कृषि/कृषि विस्तार, नागौर • संयुक्त निदेशक, सुचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, नागौर • उप निदेशक, उद्यान विभाग, नागौर • सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग अजमेर(संभाग कार्यालय) • सहायक निदेशक सुचना व जन सम्पर्क विभाग नागौर • जिला खेल अधिकारी, नागौर • लेखा अधिकारी जिला कलक्टर कार्यालय नागौर	सदस्य
3	उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग नागौर	सदस्य सचिव

5. जिला स्तरीय समिति के कार्यः–

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिलें में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार–प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव–जिला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की **बैठक प्रत्येक तिमाही** में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

6.पंच गौरव नागौर

''पंच गौरव'' राजस्थान सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को बढ़ावा देना है। इस कार्यक्रम के तहत, प्रत्येक जिले में निम्नलिखित पांच क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता हैः

नागौर जिले में चिन्हित ''पंच गौरव'' निम्नानुसार हैः

- एक जिला–एक उपजः **मूंग** की खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- एक जिला–एक जिला–एक वानस्पतिक प्रजातिः **खेजड़ी** वृक्ष के संरक्षण और संवर्धन पर जोर दिया गया है।
- एक जिला–एक उत्पादः **पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण** के उत्पादन और विपणन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- एक जिला–एक पर्यटन स्थलः **मीराबाई स्मारक मेड़ता सिटी** के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का विकास किया जा रहा है।
- एक जिला–एक खेलः **कबड्डी** खेल को विशेष समर्थन और सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य स्थानीय संसाधनों और विशेषताओं का उपयोग करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, रोजगार के अवसर सृजित करना और जिले की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखना है।

हमारे नागौर के पंच गौरव

राजस्थान सरकार की ओर से एक अभिनव पहल करते हुए हर जिले को एक नई पहचान देने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास को नाम दिया गया है "पंच गौरव। जिले में एक उपज, एक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल पर विषेष रूप से ध्यान देने तथा समुचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए जिले के पंच गौरव के रूप में जाना जाएगा।

पंच गौरव के तत्व	नाम	विवरण	चित्र
एक जिला एक उत्पाद	मसाला पान मैथी /प्रसंस्करण	नागौरी पान मैथी अपने अनूठे स्वाद के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यह मैथी के पत्तों का सूखा रूप है, जिसे व्यंजनों में मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है। यह विदेशों में भी निर्यात की जाती है।	
एक जिला एक खेल	कबड्डी	कबड्डी एक सामूहिक खेल है, इस खेल को नागौर में गांवों तक प्रमुख रूप से खेला जाता है। जिले के अनेकों खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।	
एक जिला एक पर्यटन स्थल	मीरा बाई स्मारक	मीरा बाई स्मारक भक्त शिरोमणि मीरा बाई के जीवनकाल से जुड़े इस संग्रहालय में पुस्तकालय भी है। यहां मीरा बाई के जीवनवृत का प्रलेखीकरण बड़े–बड़े पन्नों पर किया गया है।	
एक जिला एक उपज	मूंग	मूंग नागौरी मूंगों में पौषक तत्व भरमार है। अंकुरित मूंगों में कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड और विटामिन्स की मात्रा दोगुनी होती है। नागौरी मूंग लम्बे समय तक खराब नहीं होते है।	
एक जिला एक प्रजाति	खेजड़ी	खेजड़ी (Prosopis cineraria), राजस्थान का राज्य वृक्ष, जिसे "रेगिस्तान का गौरव", 'कल्पवृक्ष" और 'शमी' भी कहा जाता है, अपनी गहरी जड़ों से मरूस्थलीकरण को रोकने और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सक्षम है।	

7. एक जिला–एक उत्पादः पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण

नागौर जिले में ''एक जिला–एक उत्पाद'' (ODOP) पंच गौरव कार्यक्रम के तहत पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण को प्रमुख उत्पाद के रूप में चुना गया है। पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण अपनी विशेष सुगंध, औषधीय गुणों और उच्च गुणवत्ता के कारण प्रसिद्ध है। इसे स्थानीय किसानों की आजीविका सुधारने और राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर विपणन को बढ़ावा देने के लिए इस योजना में शामिल किया गया है।

पान मैथी एवं मसाला प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमः

1. कृषि तकनीकों में सुधार – उन्नत बीज, जैविक खेती और आधुनिक तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
2. प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन – किसानों को मैथी की प्रोसेसिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग की ट्रेनिंग दी जा रही है।
3. बाजार विस्तार – ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म, सरकारी विपणन तंत्र और सहकारी समितियों के माध्यम से इसे बड़े बाजारों में पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है।
4. निर्यात को बढ़ावा – नागौरी मैथी की अंर्तराष्ट्रीय मांग को देखते हुए इसे विदेशी बाजारों तक पहुंचाने के लिए सरकार सहायता कर रही है।
5. किसानों को आर्थिक सहायता – सरकारी योजनाओं के तहत किसानों को सब्सिडी, लोन और अन्य सुविधाएं दी जा रही हैं।

नागौरी मैथी अपने औषधीय गुणों, स्वाद और पौष्टिकता के कारण राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका उपयोग मसाले, औषधि और हर्बल उत्पादों में व्यापक रूप से किया जाता है।

8. एक जिला–एक उपजः मूंग

''एक जिला–एक उपज'' पंच गौरव कार्यक्रम के तहत नागौर जिले में मूंग (ग्रीन ग्राम) को प्रमुख कृषि उपज के रूप में चुना गया है। नागौर की जलवायु और मिट्टी मूंग की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है, जिससे यहां के किसान बड़े पैमाने पर इसका उत्पादन करते हैं। सरकार इस फसल को बढ़ावा देकर किसानों की आय बढ़ाने और इसे राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचाने के लिए प्रयास कर रही है।

मूंग की खेती को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासः

1. उन्नत कृषि तकनीकों का उपयोग आधुनिक ड्रिप सिंचाई प्रणाली और जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।अधिक उपज देने वाले संकर (हाइब्रिड) बीजों का वितरण किया जा रहा है।

2. किसानों को वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण किसानों को सब्सिडी पर बीज, खाद और कीटनाशक उपलब्ध कराए जा रहे हैं।कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) और अन्य संस्थानों के माध्यम से किसानों को नई खेती तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

3. भंडारण और विपणन में सुधार मूंग की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए गोदामों और कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।ई–नाम (e&NAM) पोर्टल के माध्यम से किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए डिजिटल मार्केटिंग प्लेटफॉर्म से जोड़ा जा रहा है।

4. मूंग के मूल्य संवर्धन और निर्यात को बढ़ावा देने एवं मूंग से बनने वाले उत्पादों जैसे दाल, मूंगफली स्प्राउट्स और प्रोटीन पाउडर के प्रसंस्करण उद्योगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। राजस्थान सरकार मूंग को अंर्तराट्रीय बाजारों में निर्यात करने के लिए सरकारी नीतियों और व्यापार समझौतों के तहत समर्थन दे रही है।

मूंग की खेती से होने वाले लाभः

- मूंग दलहन फसल होने के कारण मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में मदद करती है।
- कम जल खपत वाली फसल होने से यह जल संरक्षण में सहायक है।
- मूंग में उच्च प्रोटीन होने के कारण यह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है और इसकी मांग हमेशा बनी रहती है।
- मूंग किसानों को तेजी से आर्थिक लाभ देने वाली फसल है, क्योंकि इसकी अवधि 60–70 दिन की होती है।

9. एक जिला–एक वनस्पति : खेजड़ी

नागौर जिले में ''एक जिला–एक वनस्पति'' के रूप में खेजड़ी वृक्ष (Prosopis cineraria) के संरक्षण और संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है। यह पहल जिले की जलवायु, पारिस्थितिकी तंत्र, कृषि और लोकजीवन को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है।

खेजड़ी वृक्ष का महत्त्व

1. पर्यावरणीय महत्त्वः
    - यह वृक्ष राजस्थान के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है और रेगिस्तानी पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
    - मृदा संरक्षण में सहायक है, क्योंकि इसकी जड़ें गहरी होने के कारण मिट्टी को पकड़कर रखती हैं और रेतीली मिट्टी के कटाव को रोकती हैं।
    - भूजल स्तर बनाए रखने में मददगार है, क्योंकि यह कम पानी में भी जीवित रह सकता है और जल संचयन को प्रोत्साहित करता है।
    - मरुस्थलीय क्षेत्रों में कार्बन पृथक्करण (Carbon Sequestration) की क्षमता रखता है, जिससे जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायता मिलती है।
2. आर्थिक और सामाजिक महत्त्वः
    - खेजड़ी की लकड़ी मजबूत और टिकाऊ होती है, जिससे यह ईंधन और निर्माण कार्यों में उपयोगी है।
    - इसके फल (सांगरी) और पत्तियों का उपयोग पशु चारे और भोजन के रूप में किया जाता है।
    - सांगरी और खेजड़ी की फली को सुखाकर सब्जी बनाई जाती है, जो राजस्थान के पारंपरिक व्यंजनों का हिस्सा है।
    - किसान इसके नीचे खेती कर सकते हैं, क्योंकि यह भूमि की उर्वरता को बढ़ाता है और अन्य फसलों को छाया प्रदान करता है।
3. सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्त्वः

बिश्नोई समाज के लोग खेजड़ी वृक्ष को विशेष रूप से पूजनीय मानते हैं और इसके संरक्षण के लिए कई आंदोलन किए हैं। 1730 में अमृता देवी बिश्नोई आंदोलन में बिश्नोई समुदाय के 363 लोगों ने खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

संरक्षण और संवर्धन के लिए उठाए गए कदम

1. वृक्षारोपण और नर्सरी विकासः
    - पंचायत स्तर पर खेजड़ी वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है।
    - वन विभाग और कृषि विभाग के सहयोग से खेजड़ी पौधशालाओं (नर्सरी) का विकास हो रहा है।
    - किसानों और ग्रामीण समुदायों को मुफ्त या सब्सिडी पर पौधे उपलब्ध कराए जा रहे हैं।
2. जन–जागरूकता और सामुदायिक भागीदारीः विद्यालयों में ''एक पेड़, एक छात्र'' अभियान के तहत प्रत्येक छात्र संरक्षण और संवर्धन के लिए उठाए गए कदम
    - वृक्षारोपण और नर्सरी विकासः पंचायत स्तर पर खेजड़ी वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है।

- वन विभाग और कृषि विभाग के सहयोग से खेजड़ी पौधशालाओं (नर्सरी) का विकास किया जा रहा है।

3. सरकारी योजनाएं और वित्तीय सहायताः राजस्थान सरकार ने ''ग्रीन राजस्थान अभियान'' के तहत खेजड़ी के संरक्षण के लिए विशेष अनुदान देने की योजना बनाई है।

- मनरेगा (MGNREGA) के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।
- कृषि वानिकी (Agroforestry) योजनाओं के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे अपनी भूमि पर खेजड़ी के वृक्ष लगाएं।

4. जल संरक्षण और सिंचाई तकनीकः टपक सिंचाई (Drip Irrigation) और जल संचयन तकनीक को अपनाकर खेजड़ी वृक्षों को लंबे समय तक जीवित रखा जा रहा है।

- तालाबों, जोहड़ों और जलग्रहण क्षेत्रों के विकास से जल उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

5. कानूनी संरक्षण और नीति निर्माणः वन संरक्षण अधिनियम, 1980 और राजस्थान वृक्ष संरक्षण नीति के तहत खेजड़ी को कटने से बचाने के लिए सख्त प्रावधान किए गए हैं।

- पर्यावरण विभाग और वन विभाग की टीमें नियमित रूप से निरीक्षण कर रही हैं, ताकि अवैध कटाई को रोका जा सके।

संभावित प्रभाव और भविष्य की दिशा

1. पर्यावरणीय प्रभावः वृक्षारोपण से नागौर जिले में हरित आवरण (Green Cover) में वृद्धि होगी, जिससे रेगिस्तानीकरण (Desertification) को रोका जा सकेगा। अधिक वृक्षों के कारण वायु गुणवत्ता में सुधार होगा और तापमान संतुलन बनाए रखने में मदद मिलेगी।

2. कृषि और ग्रामीण विकासः खेजड़ी के साथ मिश्रित खेती (Mixed farming) से किसानों को अतिरिक्त आय के अवसर मिलेंगे। पशुपालन में इसका चारे के रूप में अधिक उपयोग होने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावः पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने में मदद मिलेगी।

एक जिला एक वनस्पति - खेजड़ी

- खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है।
- खेजड़ी एक कांटेदार और कम पत्तों युक्त पर्णपाती मध्यम आकार का वृक्ष है।
- इसके पत्तों के झड़ जाने के कुछ समय बाद ही 6 से 8 वें वर्ष में छोटे और पीले रंग के फूल आना आरम्भ हो जाते है।
- इसकी जड़ें जमीन में गहराई तक जाती है और भरपूर मात्रा में खनिज एवं पोषक तत्व भूमि की गहराई से प्राप्त करती है।
- खेजड़ी लगाए जाने से कृषि फसलों को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता है।
- खेजड़ी अपेक्षाकृत धीमी गति से बढ़ने वाला वृक्ष है, खेजड़ी की औसत ऊंचाई 10 तक होती है।
- खेजड़ी वृक्ष ठंडी और अधिक उष्णता (0 डिग्री सेल्सियस से 50 डिग्री सेल्सियस) सहन कर सकता है।
- खेजड़ी कम ऊंचाई वाले क्षेत्र में होती हैं 100 मि.मी. से 900 मि.मी. तक वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों लग सकती है।
- खेजड़ी का वृक्ष हल्की पथरीली, रेतीली और क्षार वाली जमीन (पीए 9.8 तक) या काली और चिकनी जमीन पर भी पनप सकता है।

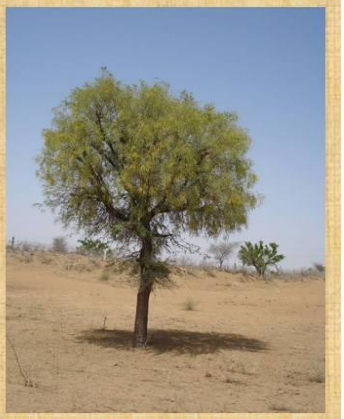

10. एक जिला–एक खेलः कबड्डी खेल

''एक जिला–एक खेल'' योजना के तहत नागौर जिले में कबड्डी को प्रमुख खेल के रूप में चुना गया है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों में कबड्डी एक लोकप्रिय खेल है, और नागौर जिले में इसकी मजबूत परंपरा रही है। सरकार इस खेल को बढ़ावा देकर स्थानीय युवाओं को राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने में सहायता कर रही है।

कबड्डी को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासः

1. प्रशिक्षण सुविधाओं का विकास – जिले में कबड्डी के प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जहां युवा खिलाड़ियों को आधुनिक तकनीकों के साथ प्रशिक्षित किया जा रहा है।
2. कोच और विशेषज्ञों की नियुक्ति – पेशेवर कोच और अनुभवी खिलाड़ियों की मदद से प्रशिक्षण को उच्च स्तर पर ले जाया जा रहा है।
3. स्थानीय और राज्य स्तरीय टूर्नामेंट – ग्रामीण और जिला स्तर पर नियमित कबड्डी प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं, जिससे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को उभरने का मौका मिल रहा है।
4. राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय अवसर – बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
5. आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन – खिलाड़ियों को खेल सामग्री, ट्रैकसूट, और वित्तीय सहायता दी जा रही है ताकि वे बिना किसी रुकावट के अपने खेल पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
6. कबड्डी लीग और प्रचार–प्रसार – प्रो कबड्डी लीग (PKL) जैसी प्रतियोगिताओं से प्रेरणा लेकर स्थानीय स्तर पर लीग टूर्नामेंट की शुरुआत की जा रही है।

परिणाम और प्रभावः

- जिले के युवा अब खेल को एक करियर विकल्प के रूप में देख रहे हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कबड्डी की लोकप्रियता बढ़ी है और अधिक बच्चे इसे अपनाने लगे हैं।
- राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर नागौर के खिलाड़ियों का प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा है।

नागौर में कबड्डी को विशेष समर्थन देने से न केवल खेल संस्कृति को बढ़ावा मिला है, बल्कि युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर भी मिल रहा है। सरकार और खेल संगठनों की मदद से नागौर जल्द ही राजस्थान के प्रमुख कबड्डी हब में से एक बन सकता है।

एक जिला एक खेल- कबड्डी

कबड्डी मूल रूप से एक संघर्षपूर्ण खेल है, जिसमें प्रत्येक पक्ष में सात खिलाड़ी होते हैं; 5 मिनट के ब्रेक (20-5-20) के साथ 40 मिनट की अवधि के लिए खेला जाता है। खेल का मुख्य विचार प्रतिद्वंद्वी के कोर्ट में रेड करके और बिना किसी परेशानी के यथासंभव अधिक से अधिक डिफेंस खिलाड़ियों को छूकर अंक अर्जित करना है

11. एक जिला–एक पर्यटन स्थलः मीराबाई स्मारक

''एक जिला–एक पर्यटन स्थल'' पंच गौरव कार्यक्रम के तहत नागौर जिले में मीराबाई स्मारक, मेड़ता सिटी को प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह स्मारक भक्तिकाल की महान संत और कृष्ण भक्त मीराबाई से जुड़ा हुआ है, जो अपने भक्ति गीतों और भजनों के लिए प्रसिद्ध थीं।

मीराबाई स्मारक और मेड़ता सिटी का ऐतिहासिक महत्वः

1. मीराबाई की जन्मस्थली – मेड़ता सिटी मीराबाई की जन्मभूमि मानी जाती है, जो भक्ति आंदोलन में एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।
2. ऐतिहासिक किले और मंदिर – मेड़ता में कई प्राचीन मंदिर और किले स्थित हैं, जिनमें मीराबाई से जुड़े स्थल विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।
3. राजपूताना वास्तुकला – यहां की इमारतें और मंदिर राजस्थान की पारंपरिक स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
4. सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन – देश–विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक मीराबाई की भक्ति परंपरा से प्रेरणा लेने के लिए यहां आते हैं।

पर्यटन विकास के लिए किए जा रहे प्रयासः

- स्मारक का पुनर्निर्माण और सौंदर्यीकरण – मीराबाई स्मारक और मंदिर परिसर का जीर्णोद्धार किया जा रहा है।
- पर्यटन सुविधाओं का विस्तार – पर्यटकों के लिए सड़क, परिवहन, रुकने और खाने–पीने की बेहतर सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।
- सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन – मीराबाई से जुड़ी सांस्कृतिक एवं भक्ति संध्या जैसे आयोजनों को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- डिजिटल प्रचार और ई–मार्केटिंग – पर्यटन को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रचारित किया जा रहा है ताकि अधिक से अधिक लोग इस ऐतिहासिक धरोहर से परिचित हो सकें।

मीराबाई स्मारक का विकास न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि करेगा।

एक जिला एक पर्यटन स्थल- मीरा बाईं स्मारक

मीरा बाई एक मध्यकालीन हिन्दू आध्यात्मिक कवियित्री और कृष्ण भक्त थीं। वे भक्ति आन्दोलन के सबसे लोकप्रिय भक्ति-संतों में एक थीं। भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित उनके भजन आज भी उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हैं और श्रद्धा के साथ गाये जाते हैं। मीरा का जन्म राजस्थान के एक राजघराने मेड़ता के पास कुडकी गांव में हुआ था। मीरा बाई के जीवन के बारे में तमाम पौराणिक कथाएँ और किवदंतियां प्रचलित हैं। ये सभी किवदंतियां मीराबाई के बहादुरी की कहानियां कहती हैं और उनके कृष्ण प्रेम और भक्ति को दर्शाती हैं। इनके माध्यम से यह भी पता चलता है की किस प्रकार से मीराबाई ने सामाजिक और पारिवारिक दस्तूरों का बहादुरी से मुकाबला किया और कृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति में लीन हो गयीं मीरा ने अनेक पदों व गीतों की रचना की। उनके पदों में उच्च आध्यात्मिक अनुभव हैं। उनमें दिए गए संदेश और अन्य संतों की शिक्षाओं में समानता नजर आती है। उनके पद उनकी आध्यात्मिक उंचाई के अनुभवों का आईना है। मीरा ने अन्य संतों की तरह कई भाषाओं का प्रयोग किया है, जैसे - हिंदी, गुजराती, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, अरबी, फारसी, मारवाड़ी, संस्कृत, मैथिली और पंजाबी।

जिला प्रशासन, नागौर